STUDYHUB.NET.IN

राजस्थान में 1857 की क्रांति

पृष्ठभूमि, सैन्य छावनियां, प्रमुख विद्रोह और क्रांतिकारियों का संपूर्ण अध्ययन

📜 1. पृष्ठभूमि — 1818 की संधियाँ और असंतोष की जड़ें

1857 की कहानी अचानक शुरू नहीं हुई। इसकी जड़ें 1818 ई. में जा छुपी थीं, जब राजस्थान के अधिकांश रजवाड़ों ने अंग्रेजी कम्पनी के साथ संधियाँ कर लीं। मराठा अराजकता से मुक्ति और बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा — यही दो वजहें इन संधियों के पीछे बताई जाती हैं। लेकिन सुरक्षा की यह छाया धीरे-धीरे दबाव में बदल गई। जैसे-जैसे कम्पनी के अधिकारी इन संधियों की शर्तें लागू करने लगे, रजवाड़ों के पारंपरिक अधिकार खोखले होने लगे। स्वदेशी नरेशों की सर्वोच्चता को सीधी चुनौती मिली — उनकी हैसियत घटकर कम्पनी के सामंतों और जागीरदारों जैसी हो गई।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** छात्र अक्सर यह मान लेते हैं कि 1857 की क्रांति केवल "कारतूस विवाद" से शुरू हुई। वास्तव में, 1818 की संधियों से उत्पन्न दीर्घकालिक असंतोष — सामंती मर्यादाओं का क्षरण, आर्थिक नीतियों का बोझ — पृष्ठभूमि में पहले से मौजूद था।

कारण-श्रेणी	प्रभावित वर्ग	प्रभाव
राजनीतिक	राजा, सामंत	सर्वोच्चता और मर्यादाओं का क्षरण
आर्थिक	किसान, व्यापारी, शिल्पकार	नई नीतियों से कठिनाइयाँ
सामाजिक-धार्मिक	सैनिक (हिंदू व मुस्लिम)	चर्बीयुक्त कारतूसों से धार्मिक आहत भावना

🔑 **परीक्षा बिंदु:** तत्कालीन गवर्नर-जनरल कैनिंग ने ब्राउन बैस राइफलों के स्थान पर **एनफील्ड राइफलों** को सेना में लागू किया, जिनके कारतूसों में गाय व सुअर की चर्बी होती थी — यही तात्कालिक चिंगारी बनी।

🏛️ 2. राजपूताना रेजीडेंसी — प्रशासनिक ढांचा

राजपूताना रेजीडेंसी की स्थापना 1832 ई. में हुई, मुख्यालय अजमेर में रखा गया। इसका सर्वोच्च अधिकारी **'एजेंट टू गवर्नर जनरल' (A.G.G.)** कहलाता था — यह पद राजस्थान की सभी रियासतों पर ब्रिटिश निगरानी की धुरी था।

स्थापना वर्ष / मुख्यालय	1832 ई. / अजमेर
प्रथम ए.जी.जी. (A.G.G.)	श्री लॉकेट
ग्रीष्मकालीन कार्यालय आबू स्थानांतरण	1845 ई., विलियम बैंटिक द्वारा
1857 के समय ए.जी.जी.	**जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स**
ब्रिटेन के प्रधानमंत्री (1857)	लॉर्ड पामर्स्टन
भारत के गवर्नर-जनरल (1857)	लॉर्ड कैनिंग
कम्पनी सेना का प्रधान सेनापति	कैंपबेल

💡 **अनुभवी टिप्पणी:** ए.जी.जी. का पद समझना जरूरी है क्योंकि लगभग हर रियासत की कहानी में एक "पॉलिटिकल एजेंट" जरूर आता है — और यही नेटवर्क पूरे राजस्थान में अंग्रेजी पकड़ का आधार था।

रियासतों में नियुक्त राजनीतिक एजेंट

रियासत	पॉलिटिकल एजेंट	तत्कालीन शासक
जयपुर	ईडन	रामसिंह-द्वितीय
कोटा	बर्टन	रामसिंह-द्वितीय
जोधपुर	जी.एच. मोक मेसन	तख्त सिंह
उदयपुर	शावर्स	स्वरूप सिंह
सिरोhi	जे.डी. हॉल	शिवसिंह
भरतपुर	मॉरीसन (बाद में निक्सन)	जसवंत सिंह (अल्पवयस्क)

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** भरतपुर के शासक जसवंत सिंह अल्पवयस्क थे, इसलिए मॉरीसन को वापस भेजना पड़ा और निक्सन ने धौलपुर के साथ-साथ भरतपुर का भार भी संभाला — यह "एक एजेंट, दो रियासतें" वाला तथ्य अक्सर भ्रम पैदा करता है।

⚔️ 3. तात्कालिक कारण — एनफील्ड राइफल और कारतूस विवाद

जब विद्रोह की चिंगारी भड़की, तात्कालिक कारण सीधा था: एनफील्ड राइफल के कारतूसों में चिकनाई के लिए गाय और सुअर की चर्बी का प्रयोग होता था। कारतूस की टोपी (केप) दांतों से हटानी पड़ती थी — इसलिए हिंदू सैनिकों ने इसे गोवध-तुल्य और मुस्लिम सैनिकों ने इसे धर्म-विरुद्ध माना।

राजस्थान में क्रांति की शुरुआत **नसीराबाद** से होने के पीछे तीन ठोस कारण थे:

- **अविश्वास से उत्पन्न तनाव:** ए.जी.जी. लॉरेन्स ने अजमेर में तैनात 15वीं बंगाल इन्फैंट्री को संदेहवश नसीराबाद भेज दिया।
- **सतर्कता ने भय को जन्म दिया:** मेरठ विद्रोह की सूचना मिलते ही अंग्रेज अधिकारियों ने भरोसेमंद समझी जाने वाली फर्स्ट बम्बई लांसर्स से गश्त शुरू करवाई और तोपें तैयार रखीं, जिससे सैनिकों ने अनुमान लगाया कि उन्हें कुचला जाएगा।

- **अफवाहों का प्रसार:** बंगाल और दिल्ली से भेषधारी साधुओं ने कारतूस-विवाद को लेकर प्रचार किया, जिससे माहौल और गर्मा गया।

> 🔑 **परीक्षा बिंदु:** आरंभिक योजना के अनुसार उठापटक की तिथि 31 मई निर्धारित थी, किंतु आंदोलन अनायास 10 मई को मेरठ से शुरू हो गया। विद्रोह का प्रमुख नेता **बहादुर शाह जफर-द्वितीय** को माना जाता है। प्रतीक चिन्ह **कमल का पुष्प और रोटी (चपाती)** था।

🪖 4. राजस्थान की सैन्य छावनियां — छह केन्द्र

जब 1857 का विद्रोह शुरू हुआ, राजपूताना में छह सैन्य छावनियां सक्रिय थीं, जिनमें कुल लगभग पाँच हजार सिपाही तैनात थे।

छावनी	स्थान	तैनात इकाई
नसीराबाद	अजमेर	15वीं बंगाल पैदल सेना
नीमच	मध्यप्रदेश सीमा	फर्स्ट बंगाल कैवेलरी
देवली	टोंक	कोटा कंटिंजेंट
ब्यावर	अजमेर	मेर रेजीमेंट
एरिनपुरा	पाली	जोधपुर लीजन
खेरवाड़ा	उदयपुर	मेवाड़ भील कोर

> 💡 **परीक्षा ट्रिक:** "न-नी-दे-ब्या-ए-खे" क्रम याद रखें। ध्यान दें — **खेरवाड़ा और ब्यावर की छावनियां विद्रोह में शामिल नहीं हुईं**, जबकि नसीराबाद सबसे सशक्त और सर्वप्रथम विद्रोही केंद्र माना जाता है। यह "अपवाद" वाला तथ्य MCQ में बहुत पूछा जाता है।

मेरठ के विद्रोह की खबर ए.जी.जी. लॉरेन्स को 19 मई 1857 को मिली। संदेश मिलते ही उन्होंने हर रजवाड़े को शांति बनाए रखने और विद्रोहियों को प्रवेश न देने का आदेश दिया। **अजमेर की सुरक्षा** उनके लिए सर्वाधिक चिंता का विषय थी, क्योंकि वहाँ भारी मात्रा में शस्त्र-बारूद और सरकारी कोष मौजूद था।

🔥 5. नसीराबाद — 28 मई 1857: राजस्थान की पहली चिंगारी

राजस्थान में क्रांति का प्रारम्भ **28 मई 1857** को नसीराबाद छावनी से हुआ। 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के सैनिकों ने विद्रोह कर छावनी लूट ली और अंग्रेज अधिकारियों के बंगलों पर आक्रमण किया।

> ए.जी.जी. लॉरेन्स का संदेह
> ↓
> 15वीं इन्फेंट्री नसीराबाद स्थानांतरित
> ↓
> तोपें तैयार, गश्त बढ़ी → सैनिकों में भय व असंतोष
> ↓
> **28 मई 1857: विद्रोह**
> → मेजर स्पोटिसवुड व न्यूबरी की हत्या

→ छावनी लूट
→ दिल्ली की ओर कूच (18 जून को पहुँचकर अंग्रेज पलटन पराजित)

🔑 **परीक्षा बिंदु:** नसीराबाद विद्रोह की तिथि **28 मई 1857** — यह राजस्थान के इतिहास में सबसे अधिक दोहराया जाने वाला तथ्य है।

⚔️ 6. नीमच छावनी विद्रोह — 3 जून 1857

नीमच में कर्नल एबॉट के सामने सैनिक **मोहम्मद अली बेग** ने अंग्रेजों की वफादारी की शपथ लेने से इन्कार करते हुए तर्क दिया कि अंग्रेजों ने स्वयं अवध पर कब्जा कर अपनी शपथ तोड़ी थी।

3 जून 1857 को **हीरासिंह** के नेतृत्व में सैनिकों ने विद्रोह किया, शस्त्रागार में आग लगाई और एक अंग्रेज सार्जेंट की पत्नी-बच्चों की हत्या कर दी। यह टुकड़ी चित्तौड़, हम्मीरगढ़, बनेड़ा होते हुए शाहपुरा पहुँची, जहाँ सामंत उम्मेद सिंह ने रसद दी। आगे निम्बाहेड़ा से होकर **5 जून को इन्होंने देवली छावनी घेरी**, फिर टोंक पहुँचे और वहाँ से आगरा होते हुए दिल्ली गए।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** नीमच से भागे लगभग 40 अंग्रेजों ने डूंगला (चित्तौड़) गांव में **रुघाराम** के घर शरण ली। मेवाड़ के राजनीतिक एजेंट शावर्स उन्हें उदयपुर ले गए, जहाँ **महाराणा स्वरूप सिंह** ने **जगमंदिर महल** में आश्रय दिया।

🏰 7. एरिनपुरा और आउवा — सबसे लम्बा संघर्ष

1835 में अंग्रेजों ने जोधपुर सेना के घुड़सवारों को अकुशल मानकर **'जोधपुर लीजियन'** का गठन किया, जिसका मुख्यालय **एरिनपुरा (पाली)** रखा गया। **21 अगस्त 1857** को इस लीजियन के सैनिकों ने विद्रोह किया, "चलो दिल्ली, मारो फिरंगी" के नारों के साथ कूच कर गए। रास्ते में इनकी भेंट आउवा के **ठाकुर कुशाल सिंह चम्पावत** से हुई।

बिथोड़ा का युद्ध (8 सितंबर 1857)

ए.जी.जी. लॉरेन्स ने जोधपुर नरेश तख्त सिंह को आउवा के सामंत को दबाने का आदेश दिया। तख्त सिंह ने अनार सिंह के नेतृत्व में सेना भेजी, जिसके साथ अंग्रेज कप्तान हीथकोट भी था। इस युद्ध में अनार सिंह मारे गए, और **कुशाल सिंह चम्पावत विजयी रहे**।

चेलावास का युद्ध (18 सितंबर 1857) — "गौरों और कालों का युद्ध"

पराजय सुनकर ए.जी.जी. जॉर्ज लॉरेन्स स्वयं सेना लेकर आउवा पहुँचे, परन्तु पराजित हुए। इस संघर्ष में जोधपुर के राजनीतिक एजेंट **मोक मेसन** क्रांतिकारियों द्वारा मारे गए; **उनका सिर आउवा किले के द्वार पर टांगा गया।**

आउवा का युद्ध (20 जनवरी 1858)

ब्रिगेडियर होम्स के नेतृत्व में अंग्रेज सेना ने आउवा पर आक्रमण किया। पराजय निश्चित दिखने पर कुशाल सिंह ने **सलूम्बर (केसरी सिंह के यहाँ)** शरण ली। अंततः अंग्रेजों ने किला जीता और **सुगाली माता (महाकाली)** की मूर्ति अजमेर ले गए। अगस्त 1860 में कुशाल सिंह ने आत्मसमर्पण किया; **मेजर टेलर आयोग** की जांच में प्रमाण न मिलने पर उन्हें रिहा कर दिया गया।

💡 **अनुभवी टिप्पणी:** आउवा कहानी इसलिए अनूठी है क्योंकि यह 21 अगस्त 1857 से अगस्त 1860 तक — लगभग तीन वर्ष — खिंची, जो राजस्थान में सबसे लम्बा प्रतिरोध था। कुशाल सिंह चम्पावत आगे चलकर लोकगीतों के नायक बन गए।

🗡️ 8. कोटा में विद्रोह — राजनीतिक एजेंट की हत्या

कोटा में शाही सेना और जनता दोनों ने संगठित प्रतिरोध किया। 15 अक्टूबर 1857 को कोटा सेना ने रेजीडेंसी घेर ली और राजनीतिक एजेंट **मेजर बर्टन, उनके दो पुत्रों और एक चिकित्सक की हत्या कर दी।** बर्टन का सिर शहर में घुमाया गया।

🔑 **परीक्षा बिंदु:** विद्रोही सेना का नेतृत्व **रिसालदार मेहराब खान और लाला जयदयाल** ने किया। महाराव रामसिंह द्वितीय लगभग बंदी बनकर महल में कैद हो गए।

जनवरी 1858 में करौली के **राजा मदनपाल** ने रामसिंह-द्वितीय को विद्रोहियों से मुक्त कराया। 22 मार्च 1858 को **जनरल रॉबर्ट्स** के नेतृत्व में अंग्रेज सेना ने कोटा को मुक्त कराया। जयदयाल और मेहराब खान को मृत्युदंड दिया गया, और **महाराव की तोपों की सलामी 15 से घटाकर 11 कर दी गई।**

🗺️ 9. अन्य रियासतें — टोंक, धौलपुर, भरतपुर, अलवर, बीकानेर, जयपुर

रियासत	जनता/सेना का रुख	शासक का रुख	विशेष तथ्य
टोंक	विद्रोहियों के साथ	नवाब वजीरुद्दौला (अंग्रेज-समर्थक)	नवाब के मामा मीर आलम खान ने विद्रोहियों का साथ दिया।
धौलपुर	ग्वालियर-इंदौर सैनिकों के साथ मिलकर विद्रोह	महाराजा भगवंत सिंह (अंग्रेज-समर्थक)	पटियाला सेना ने दिसंबर 1857 में विद्रोह दबाया।
भरतपुर	मेव व गुर्जर जनता का समर्थन	राजनीतिक एजेंट का शासन	सेना विद्रोह दबाने भेजी गई।
बीकानेर	—	**महाराजा सरदार सिंह** (सक्रिय अंग्रेज-समर्थक)	एकमात्र शासक जो सेना लेकर राज्य से बाहर (बड़ालू, हिसार) गए; पुरस्कार में टिब्बी के 41 गांव मिले।
जयपुर	विलायत खान, सादुल खान, उस्मान खान विद्रोही-समर्थक	**रामसिंह** (पूर्ण अंग्रेज-समर्थक)	अंग्रेजों ने **'सितार-ए-हिंद'** उपाधि और कोटपूतली जागीर दी।

🔑 **परीक्षा बिंदु:** लॉर्ड कैनिंग ने राजाओं के सहयोग पर कहा कि इन शासकों ने **तूफान के समय लहर-अवरोध (breakwater)** का काम किया — यानी यदि वे साथ न देते तो ब्रिटिश शासन की नौका डूब जाती।

🦸 10. प्रमुख क्रांतिकारी

- **डूंगजी–जवारजी (सीकर):** शेखावाटी के प्रमुख देशभक्त, अमीरों को लूटकर धन गरीबों में बांटते। अंग्रेज छावनियों पर धावा बोला।
- **अमर चन्द्र बांठिया:** बीकानेर निवासी, ग्वालियर में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की आर्थिक सहायता की। **'1857 की क्रांति का भामाशाह'** कहलाते हैं; राजस्थान के प्रथम क्रांतिकारी जिन्हें फांसी दी गई।
- **तात्या टोपे:** राजस्थान में जैसलमेर को छोड़कर लगभग हर रियासत में घूमे। नरवर के मानसिंह द्वारा धोखे से गिरफ्तार किए गए। **18 अप्रैल 1859 को शिवपुरी (एमपी) में फांसी दी गई।**
- **सुजा कंवर राजपुरोहित (लाडनूं):** 1857 की एकमात्र महिला क्रांतिकारी जिन्होंने पुरुष वेश धारण कर अंग्रेजों से सीधा मुकाबला किया।

📚 11. साहित्यकारों का योगदान — कलम से क्रांति

बांकीदास	जोधपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि, **'मारवाड़ के बीरबल'**।
सूर्यमल्ल मिश्रण	बूंदी महाराव रामसिंह द्वितीय के दरबारी कवि। **'वीर सतसई'** और **'वंश भास्कर'** की रचना की।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** 'वीर सतसई' और 'वंश भास्कर' दोनों सूर्यमल्ल मिश्रण की रचनाएं हैं — छात्र अक्सर इन्हें अलग-अलग कवियों से जोड़ने की भूल करते हैं।

📊 12. क्रांति का प्रभाव और ऐतिहासिक मूल्यांकन

विद्रोह के बाद अधिकांश राजाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया, इसलिए उन्हें सम्मानित किया गया। शासकों को संतुष्ट करने हेतु 'गोद निषेध' सिद्धांत समाप्त कर दिया गया। वैश्य वर्ग ने अंग्रेजों का समर्थन किया, इसलिए उन्हें संरक्षण मिला।

जॉन लॉरेन्स ने कहा था कि यदि विद्रोहियों में एक भी योग्य नेता होता तो अंग्रेज सदा के लिए हार जाते। **कप्तान प्रिचार्ड** ने अपनी पुस्तक '*Mutinies in Rajputana*' में इसे मुख्यत: सैनिक विद्रोह माना है।

❓ PYQ — विगत वर्षों के महत्वपूर्ण प्रश्न

Q1. 1857 में नसीराबाद छावनी में सैनिकों ने किस तारीख को विद्रोह किया? (RSSB 2024)
उत्तर: 28 मई।

Q2. राजस्थान में 1857 के विद्रोह के केन्द्रों का कालक्रम क्या है? (Sr. Teacher 2024)
उत्तर: नसीराबाद (28 मई) → नीमच (3 जून) → एरिनपुरा (21 अगस्त) → आउवा (सितंबर)।

Q3. कौन सा स्थान 1857 की क्रांति का केन्द्र नहीं था? (Stenographer 2024)
उत्तर: जयपुर (यहाँ के शासक रामसिंह अंग्रेज-समर्थक थे)।

Q4. 'राजस्थान रोल इन द स्ट्रगल्स ऑफ 1857' (Mutinies in Rajputana) किसने लिखा है? (JEN 2022)
उत्तर: आई.टी. प्रिचार्ड ने।

🗝️ स्मरणीय संकेत (Memory Tricks)

- **छह छावनियां:** "न-नी-दे-ब्या-ए-खे" = नसीराबाद, नीमच, देवली, ब्यावर, एरिनपुरा, खेरवाड़ा।
- **विद्रोह कालानुक्रम:** "न-नी-ए-आ-को" = नसीराबाद → नीमच → एरिनपुरा → आउवा → कोटा।
- **कोटा के नेता:** "जय-मेहर कोटा के शेर" = जयदयाल + मेहराब खान।
- **भामाशाह संबंध:** "बांठिया-बीकानेर-झांसी" = अमर चन्द्र बांठिया (बीकानेर से), झांसी की रानी की मदद।